सत्यमेव जयते
भारत सरकार

1947 में
भारत को सत्ता का हस्तांतरण

एक अल्पज्ञात मूलभूत वृत्तांत

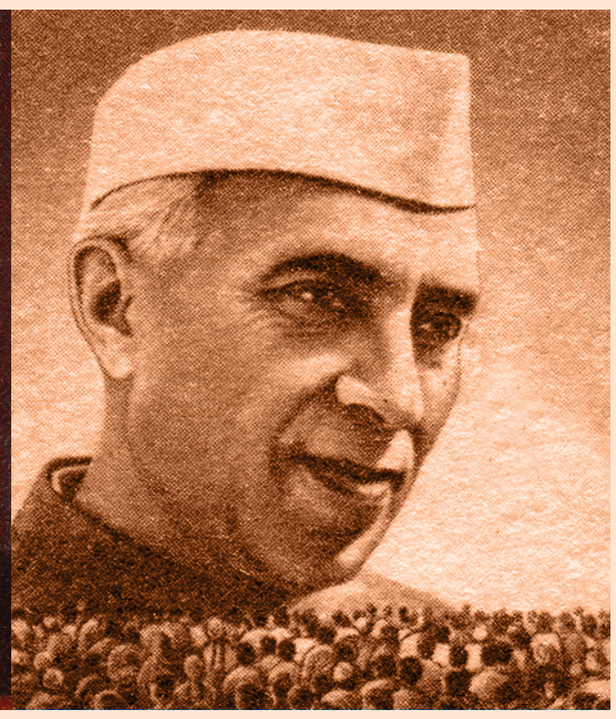

सत्ता का हस्तांतरण अंग्रेजों से भारतीय हाथों में

अंतिम वायसराय, लार्ड माउंटबेटन, एक विशिष्ट आदेश के साथ भारत आए – जिसका उद्देश्य शीघ्रता से भारतीयों को सत्ता सौंपना और अंग्रेजों के भारत छोड़ने को सक्षम बनाना था। उन्होंने आगामी प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू से पूछा कि हस्तांतरण के इस क्षण को कैसे आयोजित किया जाना चाहिए? सत्ता के हस्तांतरण को चिन्हित करने के लिए किस प्रतीक को अपनाया जाना चाहिए?

उत्तर हमारे गौरवशाली इतिहास से

नेहरू ने तमिलनाडु के वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री सी राजगोपालाचारी के समक्ष यह प्रश्न रखा, जिनके भारतीय रीति–रिवाजों के ज्ञान का वे सम्मान करते थे। राजाजी को इसका उत्तर, भारत के इतिहास में तमिलनाडु के चोला साम्राज्य की परंपरा में मिला। चोला भारत के सबसे महान व प्राचीन शासकों में से एक थे। सत्ता हस्तांतरण को चिह्नित करने हेतु, नए शासक द्वारा सेन्गोल को स्वीकार किया जाता था, जो नीतिपरायणता के प्रतीक तथा जिसे मुख्य पुजारी द्वारा दिया जाता था। राजाजी ने सुझाव दिया कि नेहरू, माउंटबेटन से उसी प्रकार का सेन्गोल स्वीकार कर सकते हैं। नेहरू ने सहमति व्यक्त की और राजाजी को यह कार्य सौंपा।

एक प्रतीक, जिसकी प्रेरणा मिली है भारत के एक महानतम साम्राज्य से

एक चोला राजा से दूसरे चोला राजा को सत्ता का हस्तांतरण, सेन्गोल को सौंपने के माध्यम से चिह्नित किया जाता था, जो कि एक ठोस, सुंदर नक्काशी वाला, सुनहरा राजदंड था। जिस पर भगवान शिव के वाहन, दिव्य बैल, नंदी की आकृति थी। नंदी न्याय के प्रतीक हैं।

उस समय के उच्च पुजारियों द्वारा, भगवान शिव के आशीर्वाद का आह्वान किया जाता था। क्योंकि चोला उनके परम भक्त थे। सेन्गोल को नए राजा को सौंपा जाता था। उनके सहस्राब्दी पुराने मंदिरों में आज भी पूजा की जाती है।

एक प्रमुख मठ ने अपनी भूमिका निभायी

राजाजी ने एक प्रमुख धार्मिक मठ, थिरूवावदुथुरई आधीनम् से संपर्क किया, जो चोला भूमि के केंद्र में स्थित पांच शताब्दियों से भी पहले स्थापित किया गया था। जो आज तक कार्यरत है। तत्कालीन द्रष्टा, 20वें गुरु महासन्निधानम श्री ला श्री अंबलवाण देसिगर स्वामी, ने उस समय बीमार होने के बाद भी इस कार्य को स्वीकार किया। उन्होंने मद्रास में प्रसिद्ध स्वर्णकार वुम्मिडी बंगारू को सेन्गोल बनाने का कार्य सौंपा।

इसके उपरांत उन्होंने अपने सहयोगी, श्री ला श्री कुमारस्वामी तम्बीरन को सेन्गोल के साथ दिल्ली जाने और आधीनम् के ओदुवार (विशेष गायक) मणिक्कम और नादस्वरम के प्रसिद्ध वादक श्री राजारथिनम पिल्लई के साथ समारोह आयोजित करने का कार्य सौंपा। प्रतिनिधिमंडल विशेष विमान से दिल्ली पहुंचा।

श्री ला श्री अंबलवाण देसिगर स्वामी

मद्रास के प्रसिद्ध स्वर्णकार वुम्मिडी द्वारा निर्मित

“आधीनम् ने हमें सेन्गोल के निर्माण का कार्य सौंपा। इसे चांदी में सोने की परत चढ़ाकर बनाया गया था। सेन्गोल को पूरा करने में 10 स्वर्ण शिल्पकारों के एक दल को 10-15 दिन लगे। हमें इतने महत्वपूर्ण अवसर से जुड़ा कार्य सौंपा गया, यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात थी। हमने सेन्गोल को सौंपने से पहले एक छोटी सी पूजा की।”

श्री वुम्मिडी एथिराजुलु

श्री वुम्मिडी सुधाकर

भारतीय कला की एक उत्कृष्ट कृति

सेन्गोल एक अति सुंदर कृति है, जिसे श्रमसाध्य और प्रेम सहित बनाया गया है। यह 5 फीट का है और ऊपर से नीचे तक समृद्ध शिल्प कौशल से संपन्न है।

नीतिपरायणता का एक उपयुक्त प्रतीक

सेन्गोल का गोला हमारे संसार का प्रतीक है, जिसके शीर्ष पर भगवान शिव के वाहन और द्वारपाल, नंदी की एक सुंदर नक्काशी है। नंदी, सर्वव्यापी दृष्टि के साथ, धर्म व न्याय के रक्षक और वाहन हैं।

भारत के नए शासक ने सेन्गोल को स्वीकार किया

श्री ला श्री तम्बीरन ने सेन्गोल को लॉर्ड माउंटबेटन को सौंपा, जिन्होंने इसे उन्हें वापस सौंप दिया। उस पर पवित्र जल छिड़का गया। श्री ला श्री तम्बीरन तब समारोह आयोजित करने हेतु सेन्गोल को नेहरू के आवास पर ले गए और स्वतंत्रता आंदोलन के कई दिग्गज नेताओं की उपस्थिति में सेन्गोल को नए शासक को सौंप दिया गया।

इस प्रकार ब्रिटिश से भारतीय हाथों में सत्ता का हस्तांतरण एक हजार वर्ष पहले की सभ्यतागत प्रथा के प्रतीक के साथ हुआ था। दक्षिण और उत्तर के उल्लेखनीय एकीकरण में, इस घटना और प्रतीक ने राष्ट्र के जन्म को स्मरणीय रूप दिया।

सेन्गोल वास्तव में इतिहास में एक सम्मानित स्थान का अधिकारी है।

विश्व मीडिया का ध्यानाकर्षण

इस घटना को भारत के स्थानीय प्रकाशनों में बड़े पैमाने पर छापा गया था। अंतरराष्ट्रीय मीडिया के पत्रकारों ने भी प्रतीक और उसके महत्व पर पूरा ध्यान दिया। 25 अगस्त 1947 की टाइम पत्रिका ने एक विस्तृत रिपोर्ट छापी।

नियति के साथ भारत का साक्षात्कार

नेहरू ने नए राष्ट्र के सफल भविष्य के लिए सेन्गोल को सत्ता के हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया। इसके बाद उन्होंने 14 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को अपना प्रसिद्ध भाषण दिया।

सुशासन सौभाग्य की ओर ले जाता है

இயல்புளிக் கோலோச்சும்
மன்னவன் நாட்ட பெயலும்
விளையுளும் தொக்கு.

"जिस देश में राजा अपने सेन्गोल को सदा न्याय के लिए
उठाएगा, वहाँ मौसमी वर्षा समय पर होगी और वह
फसलों से सदैव भरपूर रहेगा।"

– थिरुवल्लुवर

आज़ादी का
अमृत महोत्सव